विचार बिन्दु

मनुष्य अपना स्वामी नहीं, परिस्थितियों का दास है। –भगवतीचरण वर्मा

राजस्थान में कृषि शिक्षा को केंद्र के अधीन अथवा उपभोक्ता संरक्षण क़ानून के अंतर्गत लाना अब बेहद जरुरी!

राज्य में कृषि शिक्षा की जो दुर्दशा राज्य सरकार ने की है वैसी पूर्व में कभी नहीं देखी गयी। ढाई दशक से दोनों पार्टिओं की सरकारों ने इस दुर्दशा को बढ़ाने में योगदान दिया। प्रशासन में सचिव वित्त, सचिव कृषि और उनके सहयोगिओं ने इस अवनति प्रक्रिया में सम्बंधित मंत्रिओं और मुख्य मंत्री का भरपूर सहयोग किया।

इसलिए यदि दोषी माना जाये तो सम्पूर्ण शासन-प्रशासन व्यवस्था ही इस विध्वंश के लिए जिम्मेदार है।

खामिजामा इसका बहुत बड़ा है देश द्रोह जैसा, एक तो धोखा उन छात्रों और उनके अभिवावकों के साथ जो विज्ञापन के अनुसार कृषि शिक्षा ग्रहण करने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिए और जिस पर पेरेंट्स ने चार वर्षों तक उस शिक्षा का वित्तीय भार झेला हो सकता है, कईओं ने कर्ज भी लिया हो किसी ने अपनी खेती कुछ वर्ष के लिए किसी से आर्थिक सहयोग के बदले उसे एक अवधि के लिए दे दी हो और कुछ ने संभवत: अपनी पुश्तैनी खेती इस खातिर बेच भी दी हो, इन सबसे बेखबर और बेफिक्र राज्य की शासन व्यवस्था समुचित शिक्षा संसाधन उपलब्धता जुटाने में निष्क्रिय और असफल रही।

यह लेख लिखने के लिए मैंनें कृषि शिक्षित छात्रों के बहुत सीमित एम्प्लॉयमेंट अवसरों या कहें नगण्य अवसरों की एक अंग्रेजी अखवार टाइम्स ऑफ़ इंडिया दिनांक अक्टूबर 6 में छपी खबर पढ़ने के उपरान्त उत्पन्न मानसिक पीड़ा स्वरुप लिखा। खबर का आधार नेशनल इंस्टीटूशनल रैंकिंग फ्रेम वर्क के आंकलन को आधार बनाते हुए भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के डिप्टी डायरेक्टर जनरल डॉ आर.सी. अग्रवाल द्वारा विस्तृत विश्लेषण करते हुए लिखी गई। पूरा व्योरा पढ़ने पर आभास हुआ कि राजस्थान में कृषि शिक्षा व् अनुसन्धान के बारे ये कितनी सटीक और सत्य प्रतीत होती है। खबर के अनुसार केवल 29 प्रतिशत कृषि स्नातक ही कैंपस प्लेसमेंट के अंतर्गत विभिन्न पदों के लिए योग्य पाए गए। रिपोर्ट आगे भी बहुत कुछ कहती है विशेष तौर पर कि अधिकांश प्रत्याशी प्रैक्टिकल और स्किल्स परफॉर्म करने में नाकाम थे। इसका आशय है कि अध्ययन की अवधि में प्रैक्टिकल और प्रैक्टिस दक्षता व् आधुनिक उपकरणों पर कार्य अनुभव में वे सभी अयोग्य साबित हुए।

अभी यह एक आंकलन रिपोर्ट है आगे ऐसी रिपोर्टें और पब्लिश होंगी। तब कृषि शिक्षा में गिरावट की भयावता जनता और किसान सभी जानेगे। सरकार तो इस गिरावट की जननी है ऐसी रिपोर्टें छपती रहें कोई परवाह नहीं, जब तक कि देश और राज्य वर्ष 1964-65 की स्तिथि में नहीं पहुँच जाते और केंद्र के प्रधान तथाकथित सेवक मय अपने कृषि मंत्री और कुछ पूर्व कृषि वैज्ञानिकों को लेकर अन्य देशों में कटोरा लेकर नहीं निकलते ?

यदि भारत को कृषि संपन्न और सुद्रण बनाये रखना है तो यह काम केंद्र की परिधि में ही वांछनीय है। यह ऐसा महत्वपूर्ण महकमा है जिसे हम देश की रीढ़ कह सकते हैं। देश की समस्त जनता की उदरपूर्ति और स्वास्थ्य यदि ठीक से साध लिया गया तो सभी अन्य संसाधनों को सुचारु चलाने के लिए कोई भी व्यक्ति अपने शरीर और उदर को नहीं देखेगा।

राजस्थान की सरकार के बारे में तो मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि यही दशा रही तो प्रदेश भविष्य में कृषि उत्पादन श्रेणी में नीचे से पहली पायदान पर होगा। इस लेख के पाठक मेरी यह बात संजो के रख लें जिससे वह समय आने पर वे कह सकें कि एक लेखक ने ऐसी स्तिथि के लिए पूर्व में चेताया था।

जब वैसी स्तिथि सामने होगी उस समय कृषि विश्व विद्यालयों की प्रयोगशालाओं में उपस्तिथि देशी और विदेशी उपकरण जंग खाकर कवाड़ में नीलाम हो जायेंगे। तब की सरकारें संभवत: फिर से वर्ल्ड बैंक अथवा ऐसी ही कोई और अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से कर्ज या आर्थिक सहायता की गुहार करेंगी। लेकिन भारत में तब कोई स्वामीनाथन अथवा बोरलॉग सरीखा वैज्ञानिक उपलब्ध नहीं होगा।

देश कितनी ही तरक्की कर ले तरक्की के स्थायुत्व और सतत विकास का रास्ता तब तक नहीं खुलेगा जब तक कृषि शिक्षा, अनुसन्धान और उसके खेतों तक प्रसार की कड़ियाँ निर्माण होकर सुद्रण नहीं बनेंगी। ऐसा तभी संभव होगा जब सम्पूर्ण कृषि शिक्षा, अनुसन्धान और तकनीक प्रसार के कार्य को केंद्र अपने हाथ में नहीं लेता।

इसलिए यदि भारत को कृषि संपन्न और सुद्रण बनाये रखना है तो यह काम केंद्र की परिधि में ही वांछनीय है। यह ऐसा महत्वपूर्ण महकमा है जिसे हम देश की रीढ़ कह सकते हैं। देश की समस्त जनता की उदरपूर्ति और स्वास्थ्य यदि ठीक से साध लिया गया तो सभी अन्य संसाधनों को सुचारु चलाने के लिए कोई भी व्यक्ति अपने शरीर और उदर को नहीं देखेगा।

मैं जो ऐसा अनुभव कर पा रहा हूँ उसका मुख्य कारण है मेरा भुक्तभोगी होना। वर्ष 1962 के बाद के समय मैंनें अपने परिवार सहित अमेरिका का लाल गेंहू खाया है जिसे परिवार का कोई सदस्य घंटों राशन की दूकान पर लाईन में खड़े होकर प्राप्त करता था। आज की पीड़ी ऐसी अवस्था की पीड़ा को तबतक अनुभव नहीं सकती जबतक वे एक बार ऐसी स्तिथि से न गुजरें।

अंत मैं मेरी केंद्र सरकार से गुजारिश है कि वह राजस्थान प्रदेश की सम्पूर्ण कृषि शिक्षा, अनुसन्धान और सम्बंधित टेक्नोलॉजी ट्रांसफर का ताना-बाना अविलम्ब अपने अधीन करे। यदि ऐसा करना असंभव हो तो इस शिक्षा, अनुसन्धान और तकनिकी प्रसार कार्य को 'उपभोक्ता संरक्षण क़ानून' के अंतर्गत किया जाय ताकि अपने अधिकार के लिए सम्बंधित लोग संघर्ष कर सकें और अधिकारों पर कुठाराघात करने वालों को उत्तरदायी ठहरा कर उन पर समुचित आर्थिक दंड दिलवा सकें।

मेरा यह सुझाव सम्पूर्ण कृषि क्षेत्र के बचाव, उन्नयन और विकास के लिए श्रेयकर रहेगा और प्रदेश का किसान सभी दृष्टिओं से अधिक लाभान्वित होगा। आशा करता हूँ कृषि के बारे में मेरे इन दो सुझावों पर सरकार निष्पक्ष विचार कर निर्णय लेगी।

बिघटन होते ओर न देखें वांछित कार्यवाही अपेक्षित है। श्रीराम किसानी और किसानों की भली करें।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं डीन डेरी व् खाद्य प्रौद्योगिकी,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय, उदयपुर राजस्थान

राशिफल गुरूवार 23 अक्टूबर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, विशाखा नक्षत्र रात्रि 4:51 तक, आयुष्मान योग शुक्रवार प्रात: 5:00 तक, बालव करण दिन 9:32 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10:06 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-तुला, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरू-मिथुन, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और रवियोग रात्रि 4:51 से आरम्भ होगा। सायन वृश्चिक में सूर्य प्रवेश प्रात: 9:21 पर करेगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, भैया दूज, यम द्वितीया, चित्र गुप्त पूजा, कलम दवात पूजा है। आज विश्वकर्मा दिवस है। आज से राष्ट्रीय कार्तिक मास आरम्भ होगा और हेमन्त ऋतु आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:59 तक, चर 10:47 से 12:11 तक, लाभ अमृत 12:11 से 2:59 तक, शुभ 4:24 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:35, सूर्यास्त 5:55

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। घर-परिवार में महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय बना रहेगा।

भारतीय संस्कृति में प्रकृति संरक्षण का प्रतीक है "गोवर्धन पूजा"

गोवर्धन पूजा को अन्नकूट महोत्सव भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है भोजन का पहाड़। इस दिन भक्तजन 56 प्रकार के व्यंजन छप्पन भोग तैयार कर भगवान श्रीकृष्ण और गोवर्धन पर्वत को अर्पित करते हैं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

दीपोत्सव की आलोकमय श्रृंखला में दीपावली के अगले दिन मनाई जाने वाली गोवर्धन पूजा भारतीय संस्कृति का ऐसा पर्व है जो केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, संरक्षण और सह-अस्तित्व की चेतना का उत्सव है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि मनुष्य का जीवन प्रकृति के वरदानों पर टिका है, और उनका सम्मान करना ही सच्चा धर्म है। बृज क्षेत्र में स्थित गोवर्धन पर्वत न केवल पौराणिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही वह पर्वत है, जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने द्वापर युग में अपनी छोटी उंगली पर उठाकर बृजवासियों को भीषण वर्षा से बचाया था। इस कथा में निहित संदेश केवल दैवी चमत्कार का नहीं, बल्कि यह प्रकृति की शक्तियों के प्रति आदर और संतुलन का प्रतीक है।

विष्णु पुराण के अनुसार, जब ब्रजवासी वर्षा देव इंद्र की पूजा करते थे, तब बालक कृष्ण ने उन्हें समझाया कि वर्षा और समृद्धि का वास्तविक स्त्रोत गोवर्धन पर्वत और प्रकृति है, जो पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों और मनुष्यों को जीवनदायिनी ऊर्जा प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि इंद्र नहीं, इस पर्वत की पूजा करो, जो तुम्हें जीवन देता है। यही वह क्षण था जब मानव ने पहली बार ईश्वर के साथ-साथ प्रकृति को भी पूज्य मानने की परंपरा को अंगीकार किया।

पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब भगवान श्रीराम लंका विजय हेतु सेतु निर्माण का कार्य कर रहे थे, तब उन्होंने वानर सेना को पर्वत और विशाल पत्थर लाने का आदेश दिया। हनुमान जब द्रोणगिरी पहुंचे तो वहाँ गोवर्धन पर्वत मिले, जिन्होंने विनम्रतापूर्वक श्रीराम की सेवा में जाने की अनुमति दी किंतु शर्त रखी कि उन्हें भगवान के दर्शन अवश्य कराए जाएं।

हनुमान गोवर्धन को लेकर समुद्र तट की ओर जा ही रहे थे कि तभी संदेश मिला कि पुल निर्माण पूरा हो गया है। उन्होंने गोवर्धन को ब्रजभूमि में स्थापित कर दिया। हनुमान ने भगवान राम से प्रार्थना की और प्रभु ने आश्वासन दिया कि द्वापर युग में श्रीकृष्ण रूप में अवतार लेकर वे स्वयं गोवर्धन की पूजा करेंगे। यही वचन श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने की दिव्य लीला के रूप में पूर्ण हुआ। गोवर्धन परिक्रमा हिंदू आस्था में अत्यंत पवित्र मानी जाती है। लगभग 21 किलोमीटर लंबी परिक्रमा भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति, श्रद्धा और प्रकृति के प्रति आभार का प्रतीक है। भक्तजन गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा कर अपने जीवन से अहंकार, पाप और नकारात्मकता को दूर करने का संकल्प लेते हैं। यह यात्रा आत्मशुद्धि, संयम और आध्यात्मिक उन्नित का माध्यम मानी जाती है। परिक्रमा के दौरान हर कदम प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, जीवों के प्रति करुणा और ईश्वर पर पूर्ण विश्वास का संदेश देता है।

गोवर्धन पूजा को अन्नकूट महोत्सव भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है भोजन का पहाड़। इस दिन भक्तजन 56 प्रकार के व्यंजन छप्पन भोग तैयार कर भगवान श्रीकृष्ण और गोवर्धन पर्वत को अर्पित करते हैं। यह अर्पण केवल धार्मिक भाव से नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने का माध्यम है। खेतों की उपज, जल, पशुधन और पृथ्वी की उर्वरता सब कुछ उसी प्राकृतिक चक्र का परिणाम हैं।

यह पर्व इन सभी की रक्षा और सम्मान करने का संदेश देता है। ब्रजभूमि सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में यह पर्व अनूठे उल्लास के साथ मनाया जाता है। लोग गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत के प्रतीक स्वरूप आकृतियाँ बनाते हैं, उन्हें पुष्पों और रंगों से सजाते हैं, और कीर्तन-भजन करते हुए परिक्रमा करते हैं। यह परंपरा धरती माता और गौमाता के प्रति भारतीय श्रद्धा की जीवंत अभिव्यक्ति है।

दीपावली के अगले दिन ब्रजभूमि में मंदिरों में अन्नकूट प्रसादी का आयोजन होता है। श्रद्धालु अपने घरों में गोबर से बने गोवर्धन की पूजा करते हैं और सामूहिक भंडारों में प्रसाद वितरित करते हैं। प्रमुख मंदिरों में भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी की मूर्तियों का दूधाभिषेक किया जाता है तथा मंदिरों को पुष्पों और दीपों से सजाया जाता है। ब्रजवासियों के लिए यह केवल उत्सव नहीं, बल्कि अपने आराध्य श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं को स्मरण करने का अवसर है। स्थानीय लोकगीतों और भजनों में गोवर्धन की महिमा का वर्णन होता है। गिरिराज धरण की जय हो का जयघोष आज भी प्रकृति की शक्ति के प्रति भारतीय आस्था का जीवंत प्रतीक है।

गोवर्धन पर्वत का इतिहास महाभारत काल से भी जुड़ा है। द्रोणाचल पर्वत के पुत्र गोवर्धन की सुंदरता देखकर पुलस्त्य ऋषि ने उसे काशी में स्थापित करने का मन बनाया। किंतु ब्रजभूमि पर पहुँचते ही गोवर्धन वहीं स्थिर हो गया। ऋषि के श्राप से उसे प्रतिदिन तिल-तिल घटने का अभिशाप मिला, और आज भी कहा जाता है कि गोवर्धन पर्वत का आकार धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। यह कथा प्रतीकात्मक रूप से बताती है कि यदि मनुष्य प्रकृति के साथ अपने अहंकार के कारण छेड़छाड़ करेगा, तो वह धीरे-धीरे उसका क्षय कर देगा। श्रीकृष्ण द्वारा उसी गोवर्धन पर्वत को उठाकर इंद्र के घमंड का दमन करना यह संदेश देता है कि प्रकृति से विरोध नहीं, सहयोग ही जीवन का मूलमंत्र है। गोवर्धन पूजा हमें यह सिखाती है कि मनुष्य का अस्तित्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पंचतत्वों पर निर्भर है। इन्हीं तत्वों का संतुलन ही सृष्टि के जीवन चक्र को संचालित करता है। जब मनुष्य अहंकारवश इन तत्वों का शोषण करने लगता है, तब प्रकृति प्रतिशोध के रूप में आपदाओं, अतिवृष्टि या अनावृष्टि के रूप में चेतावनी देती है।

गोवर्धन पर्व की कथा इसी चेतावनी का रूपक है। जब इंद्र के घमंड से उत्पन्न मूसलाधार वर्षा ने ब्रज को डुबो दिया, तब कृष्ण ने पर्वत उठाकर जीवों की रक्षा की। यह रक्षा केवल भौतिक नहीं, बल्कि नैतिक भी थी। उन्होंने समाज को सिखाया कि प्रकृति की पूजा करो, क्योंकि वही तुम्हारा वास्तविक रक्षक है।

आज जब जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियाँ सामने हैं, तब गोवर्धन पूजा का संदेश और भी प्रासंगिक हो उठता है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि विकास का अर्थ केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलित सह-अस्तित्व है।

यदि हम अपने पर्यावरण को प्रदूषित करेंगे, वनों को नष्ट करेंगे, जल स्त्रोतों को सूखने देंगे, तो अंतत: वही संकट हमारे अस्तित्व को चुनौती देगा। गोवर्धन पूजा का यह संदेश आज के युग में प्रकृति पूजन से प्रकृति संरक्षण तक का सामाजिक अभियान बन सकता है। गोवर्धन पूजा भारतीय जीवनदर्शन की उस मूल भावना का प्रतीक है जहाँ धर्म, संस्कृति और पर्यावरण एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। यह पर्व केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि मानवता के लिए प्रकृति संरक्षण का सार्वभौमिक संदेश है। ब्रज की गोवर्धन परिक्रमा हो या छप्पन भोग का अर्पण, यह सब उस ऋण को चुकाने का प्रयास है जो मनुष्य प्रकृति से लेता आया है। श्रीकृष्ण की सीख आज भी उतनी ही प्रासंगिक है कि प्रकृति हमारी पूज्य माता है, उसका आदर और संरक्षण ही सच्चा धर्म है। गोवर्धन पूजा इस चेतना का शाश्वत उत्सव है।

–भजनलाल शर्मा,
मुख्यमंत्री, राजस्थान

उच्च शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग : मुद्दे, चुनौतियां और संभावनाएं

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, जो कभी विज्ञान फिक्शन का विषय हुआ करता था, आज उच्च शिक्षा के परिदृश्य को तेजी से बदल रहा है

प्रो. अशोक कुमार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), जो कभी विज्ञान फिक्शन का विषय हुआ करता था, आज उच्च शिक्षा के परिदृश्य को तेजी से बदल रहा है। शिक्षण और सीखने के तरीके को बेहतर बनाने की अपार क्षमता के कारण, AI अब केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि शैक्षणिक विकास का एक शक्तिशाली उत्प्रेरक बन गया है। भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान भी इस परिवर्तन को अपना रहे हैं, जिससे छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए नए अवसर खुल रहे हैं। हालांकि, इस क्रांति के साथ-साथ कई नैतिक, संरचनात्मक और शैक्षणिक चुनौतियां भी सामने आ रही हैं, जिन पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है।

उच्च शिक्षा में AI का उपयोग और अवसर

AI, उच्च शिक्षा के कई पहलुओं में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है:–

1. व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव

AI -संचालित प्लेटफॉर्म प्रत्येक छात्र की सीखने की गति, शैली और ज्ञान के स्तर के अनुरूप सामग्री और प्रतिक्रिया प्रदान कर सकते हैं। यह शिक्षकों को एक ही पाठ्यक्रम के भीतर भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं वाले छात्रों को प्रभावी ढंग से समर्थन देने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, AI ट्यूटरिंग सिस्टम छात्रों को उनके कमजोर क्षेत्रों की पहचान करके वास्तविक समय में सहायता प्रदान करते हैं।

2. प्रशासनिक दक्षता और कार्यभार में कमी

AI, प्रवेश प्रक्रिया, छात्र सहायता, पाठ्यक्रम पंजीकरण और ग्रेडिंग जैसे दोहराव वाले प्रशासनिक कार्यों को स्वचालित कर सकता है। इससे शिक्षकों का समय बचता है, जिसे वे शोध, पाठ्यक्रम विकास और छात्रों के साथ अधिक सार्थक बातचीत में लगा सकते हैं। चैटबॉट्स छात्रों के सामान्य प्रश्नों का 24/7 उत्तर देकर तत्काल सहायता प्रदान करते हैं।

3. मूल्यांकन और प्रतिक्रिया

AI, असाइनमेंट और परीक्षाओं के स्वचालित मूल्यांकन में मदद करता है, जिससे ग्रेडिंग की प्रक्रिया तेज और अधिक सुसंगत हो जाती है। यह न केवल समय बचाता है, बल्कि छात्रों को जल्दी और विस्तृत प्रतिक्रिया भी सुनिश्चित करता है, जिससे वे अपनी गलतियों को तुरंत सुधार सकें।

4. सुगमता और समावेशिता

AI -आधारित उपकरण जैसे कि टेक्स्ट-टू-स्पीच, ऑटो-ट्रांसलेशन और क्षेत्रीय भाषा समर्थन शिक्षा को अधिक सुलभ बनाते हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों और विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करना आसान हो जाता है, जिससे शैक्षणिक असमानता कम होती है।

5. अनुसंधान में सहायता

AI उपकरण, जैसे कि डेटा विश्लेषण और पैटर्न पहचान एल्गोरिदम, शोधकर्ताओं को बड़े डेटासेट को संसाधित करने और नए ज्ञान उत्पन्न करने में मदद करते हैं, जिससे शोध की गति और गहराई बढ़ती है।

प्रमुख मुद्दे और चुनौतियां :–

AI के लाभों के साथ ही कई गंभीर चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं, जिनका समाधान करना जरूरी है:–

1. शैक्षणिक ईमानदारी और साहित्यिक चोरी

जनरेटिव AI टूल जैसे कि ChatGPT छात्रों को आसानी से असाइनमेंट और निबंध तैयार करने की अनुमति देते हैं। यह शैक्षणिक ईमानदारी के संकट को जन्म देता है, जहाँ छात्र सीखने की प्रक्रिया को दरकिनार कर देते हैं। शिक्षकों को अब यह सुनिश्चित करने के लिए मूल्यांकन के तरीकों को फिर से डिज़ाइन करना होगा कि वे छात्रों के मौलिक विचार और आलोचनात्मक सोच का परीक्षण करें।

2. नैतिक पूर्वाग्रह और निष्पक्षता

AI सिस्टम को जिस डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है, यदि वह डेटा पूर्वाग्रही हो, तो AI भी समाज में मौजूदा असमानताओं और भेदभाव को दोहरा सकता है। उदाहरण के लिए, एक भर्ती AI, ऐतिहासिक रूप से कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों के खिलाफ पक्षपात कर सकता है। उच्च शिक्षा संस्थानों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके अनुप्रयोग निष्पक्ष और न्यायसंगत हों।

3. डेटा गोपनीयता और सुरक्षा

AI -आधारित प्रणालियों को छात्र प्रदर्शन, व्यवहार पैटर्न और व्यक्तिगत जानकारी सहित संवेदनशील डेटा की बड़ी मात्रा को एकत्र और विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है। इस डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि साइबर सुरक्षा जोखिमों का खतरा हमेशा बना रहता है।

4. डिजिटल विभाजन और पहुंच की असमानता :–

AI प्रौद्योगिकियों को लागू करने के लिए महंगे बुनियादी ढांचे, तेज इंटरनेट और उन्नत उपकरणों की आवश्यकता होती है। यह डिजिटल विभाजन को और गहरा कर सकता है, जहाँ आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि वाले छात्रों को इन अवसरों से वंचित होना पड़ सकता है।

5. मानव स्पर्श संस्थापन:

AI शिक्षकों के कार्यभार को कम कर सकता है, लेकिन इस बात का खतरा भी है कि छात्र-शिक्षक के बीच व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध कमजोर हो सकते हैं। शिक्षा केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं है; यह आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और सामाजिक-भावनात्मक कौशल के विकास के लिए मानव संपर्क पर भी निर्भर करती है।

6. शिक्षक तैयारी और : AI

अधिकांश शिक्षक AI टूल के प्रभावी उपयोग और उनके नैतिक निहितार्थों से पूरी तरह परिचित नहीं हैं। AI को सफलतापूर्वक एकीकृत करने के लिए, शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए AI साक्षरता और प्रशिक्षण में बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता है।

भविष्य की संभावनाएं और आगे की राह (Prospects and Way Forward)

AI उच्च शिक्षा के भविष्य को आकार देने के लिए असीम संभावनाएं प्रस्तुत करता है, बशर्ते हम चुनौतियों का समाधान विवेकपूर्ण तरीके से करें।

1. नवाचार और नए कौशल (Innovation and New Skills)

AI, आलोचनात्मक सोच, जटिल समस्या-समाधान, रचनात्मकता और अनुकूलनशीलता जैसे 21वीं सदी के कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पाठ्यक्रम को बदलने का अवसर प्रदान करता है। छात्र AI को एक उपकरण के रूप में उपयोग करना सीखेंगे, न कि केवल एक प्रतिस्थापन के रूप में।

2. जिम्मेदार AI के लिए शासन (Governance for Responsible AI)

संस्थानों को AI के उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक दिशानिर्देश और नीतियां विकसित करनी होंगी। इन नीतियों को निष्पक्षता, पारदर्शिता और डेटा गोपनीयता के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए, ताकि AI का उपयोग समावेशी और न्यायसंगत तरीके से हो सके।

3. सहयोगी शिक्षण मॉडल :–

AI को शिक्षक का विकल्प नहीं, बल्कि एक सहकर्मी माना जाना चाहिए। भविष्य का मॉडल एक हाइब्रिड दृष्टिकोण होगा, जहाँ AI प्रशासनिक और दोहराव वाले कार्यों को संभालता है, जबकि शिक्षक छात्रों को मार्गदर्शन, प्रेरणा और मानवीय अंतर्दृष्टि प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं ।

सरकारों और HEIs को AI -आधारित प्रौद्योगिकियों और डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाना होगा। इक्विटी सुनिश्चित करने के लिए, लक्षित हस्तक्षेपो के माध्यम से वंचित छात्रों के लिए संसाधनों तक पहुंच सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष– उच्च शिक्षा में AI का आगमन एक अपरिवर्तनीय क्रांति है। यह शिक्षा के दायरे को विस्तृत करने, व्यक्तिगत अनुभवों को बेहतर बनाने और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने की अभूतपूर्व क्षमता रखता है। हालांकि, इसकी सफल और नैतिक तैनाती के लिए सावधानीपूर्वक योजना, मजबूत नैतिक ढांचे और शिक्षकों के निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है। अगर AI को जिम्मेदारी के साथ और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ अपनाया जाए, तो यह निश्चित रूप से भविष्य की शिक्षा को मजबूत, सुलभ और न्यायसंगत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि मानव क्षमता को अधिकतम करना है, और AI इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक शक्तिशाली साधन हो सकता है।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर